ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 373-374
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

भारत में गठबंधन सरकार एवं चुनौतियाँ

डॉ0 पंकज चौधरी

असि0 प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोंधला–शामली (उ0प्र0) भारत

Received-16.12.2022, Revised-22.12.2022, Accepted-29.12.2024 E-mail : pankajbali21.pb@gmail.com

सारांशः ***किसी भी देश में जीवंत लोकतंत्र की सर्वप्रथम व मुख्य पहचान यह होती है कि वहाँ की प्रतिस्पर्द्धात्मक राजनीति निरंतर गतिशील रहे। भारत में 1952 से 2009 तक के चुनावों में काफी उपलब्धियाँ रही हैं। आपात स्थिति को छोड़ दिया जाए तो भारतीय लोकतंत्र प्रगति पर उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। दक्षिण एशिया के दूसरे देशों के लोकतंत्र के इतिहास की तुलना करें तो भारत में लोकतंत्र सदैव उपलब्धियों का रहा है। यहाँ संसद व विधान सभा का चुनाव सदैव समय पर होते रहे हैं। केन्द्र व प्रदेशों में सत्ता का संचालन शांतिमय ढंग से होते आया है। गठबन्धन की राजनीति के प्रयोग भी चलते आ रहे हैं। सांप्रदायिक हिंसा, अलगाववाद, आतंकवाद की आंधियों के मध्य संपूर्ण भारत में चनाव हुए है। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए भारत गर्व कर सकता है।***

कुंजीभूत शब्द– सम्बंधन सरकार, जीवंत लोकतंत्र, प्रतिस्पर्द्धात्मक राजनीति, संसद व विधान सभा, चुनाव, गठबन्धन

राजनीति विज्ञान में गठबन्धन पद को परिभाषित करते हुए रोजर स्क्रूटन ने । Dictionary of Political जीवन हीज में लिखा है कि विभिन्न दलों या राजनीतिक पहचान रखने वाले प्रमुख व्यक्तियों का आपसी समझौता गठबन्धन कहलाता है। गठबन्धन सरकार की स्थापना दो या दो अधिक राजनीतिक दलों के उम्मीदवारों के समूह अन्य किसी दल के निर्वाचित उम्मीदवारों के समर्थन से होती है। ऐसा सदन में बहुमत जुटाने के लिए होता है। गठबन्धन की आवश्यकता तब महसूस होती है जब विधायिका में किसी एक राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलता। गठबन्धन, निर्वाचन के पूर्व या पश्चात ऐसे दलों में होते ह। जो कार्यक्रम और नीतियों में समानता रखते हैं।

गठबन्ध प्रक्रिया की उत्पत्ति में समाज का मूलभूत परिवर्तन भी प्रमुख कारक है। जब कोई समाज परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है वह ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर देता है कि गठबन्धन अनिवार्य हो जाता है। फिर राजनीति सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों की उपज होती है। आज का कोई समाज स्थिर नहीं है। भारत के परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज आज न केवल जाति, धर्म, अमीर, गरीब के आधार पर बँटा है बल्कि वर्ग, जीवन शैली, व्यवसाय के आधार पर भी बँटा है। यह सामाजिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक विभाजन निर्वाचन को काफी हद तक प्रभावित करता है। क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय दल प्रभावी हो जाते हैं क्योंकि ये मतदाताओं के हितों के अनुकूल ही होते हैं वे यह नहीं देखते हैं कि राष्ट्रीय स्तर पर किसी दल को बहुमत मिलने जा रहा है या नहीं। इस परिस्थितियों में मत बँट जाता है और किसी ऐ दल को बहुमत नहीं मिल पाता जिससे गठबन्धन अनिवार्य हो जाता है। गठबन्धन सरकार कार्यक्रम बनाती है और उसका सामूहिक उत्तरदायित्व होता है।

पूर्व प्रधानमंत्री इन्द्र कुमार गुजराल ने एक बार कहा था कि देश गठबन्धन राजनीति के दौर से गुजर रहा है इसकी राजनीति अभी भी अपरिपक्व है। इसे परिपक्व होने में समय लगेगा। 1977 में जनता पार्टी की सरकार से गठबन्धन राजनीति का सिलसिला केन्द्र में शुरू हुआ था क्योंकि इस पार्टी के निर्माण में जनसंघ, भारतीय क्रांति दल, समाजवादी पार्टी, बागी कांग्रेसी नेताओं सहित भाँति–भाँति की रंगों वाली इंदिरा विरोधी राजनीतिक शक्तियों ने भूमिका निभाई थी। 1989 में विश्वनाथ प्रताप सिंह ने गठबन्धन सरकार को नए सिरे से जीवित करने की कोशिश की। 1991 के चुनाव में कांग्रेस विजयी हुआ पर 1996 से गठबन्धन सरकारों का दौर शुरू हो गया। 1998 में भाजपा के नेतृत्व में एन.डी.ए. की सरकार सत्ता में आई जो 2004 तक चली परन्तु 2004 के आम चुनावों में कांग्रेस के यू.पी.ए. गठबन्धन ने अप्रत्याशित विजय प्राप्त की और भाजपा के India Shine o Feel Good Factor को एन.डी.ए. विशेष रूप से संघ परिवार के लिए India Ruin & Feel sad factor में तब्दील कर दिया। 2009 के चुनाव में हिन्दुत्व का नारा खोखला साबित हो गया।

1977–79, 1989–91 तथा 1998–2004 की गठबन्धन सरकारों में छोटे दलों की दबाव राजनीति चरम पर रहा करती थी वह केन्द्रीय राजनीति पर अनावश्यक दबाव डालती थी। जहाँ कांग्रेस को 2004 के चुनाव में 145 सीट मिली वहीं 2009 में 206 सीटें मिली। इन चुनाव से यह स्पष्ट हो गया कि व्यक्ति आधारित आक्रमक जातिवाद से समाज का एक सीमा के पश्चात विकास अवरूद्ध हो जाता है। संदर्भित समाज (दलित, पिछड़ा, आदिवासी आदि वर्ग) विकास की मुख्य धारा से वंचित होने लगता है। यह वर्ग जातिवादी राजनीति को प्रभावित करता है। 2009 के चुनाव में वंचित व शोषित समाजों के सबसे पिछड़े वर्गों ने इस स्थिति के विपरीत वोट के माध्यम से आवाज उठायी जिसका लाभ कांग्रेस जैसी मुख्य धारा की पार्टी को मिला। इन परिणामों से यह स्पष्ट है कि भारत का औसत मतदाता अब विकास चाहता है। बिहार के चुनाव में मुख्यमंत्री नीतीश की जीत से यह स्पष्ट हो गया है कि अब जनता जाति की दबंगई से ऊपर उठकर विकास की तरफ ध्यान आकृष्ट कर रही है। बिहार का चुनाव शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, सुरक्षा, साइकिल के आधार पर लड़ा गया और इस चुनाव में नीतीश को सुनिश्चित जनादेश मिल गया है। 2009 के चुनाव से कांग्रेस की पुर्नवापसी हो गई है। भाजपा द्वारा उठाया गया सोनिया गांधी का विदेशी मूल का मुद्दा भी राजनीति परिदृश्य से बिल्कुल लुप्त हो गया है। 2009 में मार्क्सवादी पार्टी को भी शर्मनाक पराजय का समाना करना पड़ा। 2004 के चुनावों में 61 सीटें तथा 2009 सीटें ही जीत पाई। मार्क्सवादी पार्टी को

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

वर्ष 2004 में 43 सीटें प्राप्त हुई थी। मोर्चे के नेताओं ने खुलकर यह माना कि भारत अमेरिका परमाणु संधि के सवाल पर कांग्रेस से समर्थन वापस लेना नकारात्मक सिद्ध हुआ। इससे बेहतर तो यह होता कि मोर्चा महंगाई गरीबी, आतंकवाद, किसान आत्महत्या जैसे प्रभावी सवालों पर सरकार से समर्थन लेता। इस चुनाव से प्रतिपक्ष कमजोर हो गया है। आज लगभग 38 दल लोकसभा में हैं। इसका कारण राष्ट्रीय दल क्षेत्रीय महत्त्वाकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करने में विफल रहें हैं। राजनीति स्वस्थ एवं टिकाऊ होनी चाहिए जहाँ राजीव युग में सफारी राजनीतिक संस्कृति का जन्म हुआ वहीं इस बार कारपोरेट राजनीतिक संस्कृति संसद के मुहाने पर दमकती दिखाई दे रही है। 15वीं लोकसभा में 300 करोड़पति विजयी हुए।

गठबन्धन सरकार के समक्ष बाह्य चुनौतियों के रूप में आतंकवाद का उन्मूलन, एकल ध्रुवीय शक्ति व्यवस्था के विरूद्ध प्रयास, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को प्रभावशाली बनाना, दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग का विस्तार, बहुराष्ट्रीय निगमों के प्रति सतर्कता, आयात–निर्यात नीति का पालन, पाकिस्तान, बांग्लादेश के प्रति ध्यान, सीमा विवाद सुलझाना, वैश्विक आर्थिक असंतुलन के विरूद्ध आवाज है तो घरेलू चुनौतियों के रूप में महंगाई, विकास दर में वृद्धि, मनरेगा का विस्तार, शिक्षा अधिकार लागू करना, भूख कुपोषण के विरूद्ध आवाज, उच्च शिक्षा में सुधार नक्सवाद एवं माओवाद का समाधान है।

गठबन्धन सरकार के समक्ष सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि यह सफल कैसे होगा? गठबन्धन की स्थिति में मंत्रिमंडल बहुमुखी हो जाता है और मंत्रिगण अपने दलों के पोषण पर अधिक ध्यान देते हैं। गठबन्धन सरकार के अब तक के सभी अनुभव इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। अनुभव बताते हैं कि भारत जैसे देश के लिए गठबन्धन सरकारें उपयुक्त नहीं है। खण्डित जनादेश के कारण गठबन्धन सरकार के सिवाए अन्य कोई विकल्प भी नहीं है। हमार राजनीतिज्ञों को इस दिशा में सोचना होगा। अब समय आ गया है कि देश में गठबन्धन सरकारों के लिए मानकों का निर्धारण किया जाए तथा दिशा निर्देशों का निर्माण किया जाए। इस दिशा में कुछ आवश्यक सुझाव हैं :–

गठबन्धन चुनाव के पूर्व हो तथा गठबन्धन में शामिल होने वाले सभी राजनीतिक दल संयुक्त नीति तथा संयुक्त कार्यक्रम की घोषणा करें। गठबन्धन में किसी एक दल की तानाशाही न हो इसके लिए निर्णय सभी दलों द्वारा सम्मिलित रूप से लिए जानें चाहिए।

गठबन्धन के नेता को प्रत्येक संघटक दल के साथ तालमेल रखना चाहिए उसे हमेशा गठबन्धन की एकता अखण्डता को बनाए रखनें की कोशिश करनी चाहिए। गठबन्धन सरकार से समर्थन वापस लेने की स्थिति में यदि सरकार गिरने का डर हो तो समर्थन वापस लेने वाले दल पर यह बाध्यता हो कि वह साथ में वैकल्पिक नेता का नाम सुझाए। संविधान समीक्षा आयोग ने भी इसी तरह की सिफारिश की है।

जब गठबन्धन सरकार के स्थायित्व पर शंका हो तो राष्ट्रीय सरकार की गठन की दिशा में विचार करना चाहिए। राष्ट्रीय सरकार में सभी दलों के नेताओं की आनुपातिक प्रतिनिधित्व दिया जानी चाहिए।

इस तरह गठबन्धन सरकार के प्रयोग ने भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को काफी हद तक प्रभावित किया है। इससे संसदीय प्रणाली एवं प्रचलित संस्थाओं पर प्रतिकूल प्रहार हुए हैं। इससे केन्द्र राज्य संबंध तनावपूर्ण दृष्टिगोचर होने लगे हैं। भारतीय मतदाताओं को कांग्रेस के विकल्प के रूप में गठबन्धन सरकार से बड़ी आशाएँ थी, किन्तु संविद सरकारों के विरोधाभासों, असंगतियों और झगड़ों से उनकी आशाएं धूमिल हो गई। इसलिए आवश्यक है कि गठबन्धन सरकार की रीति–नीति के बारे में समझौते के कुछ बुनियादी और दीर्घकालीन बिन्दुओं पर सहमति हो। इन बिन्दुओं का संबंध सत्ता उपयोग से नहीं बल्कि गरीबी, बेरोजगारी, मंहगाई जैसी समस्याओं के समाधान ढूंढ़ने में है। गठबन्धन सरकार की सफलता का सूत्र है 'समन्वयवादी प्रकृति' जो किसी भी सरकार को ज्यादा लोकतांत्रिक और ग्राह्य बना सकती है। आशा करनी चाहिए कि गठबन्धन सरकारें अनेकता में एकता की भावना को साकार करे और साथ राष्ट्रीय अस्मिता को सुरक्षित रखते हुए क्षेत्रीय समस्याओं का राष्ट्रीय समाधान प्रस्तुत कर क्षेत्रीय दलों द्वारा उपजी संकीर्णता से राजनीति को मुक्त करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. N. JOSE CHANDER 'COALITION POLITICS' The Indian experience. concept publishing company, New Delhi – 110059
2. S. K. Khanna 'COALITION POLITICS IN INDIA' commonwealth publishers. (New Delhi - 1999)

*****